एक इंच का बच्चा जन्मता है कंगारू

प्रमोद भार्गव

सत्तर किलोग्राम का भारी भरकम और सात फीट की ऊंचाई वाले कंगारू का नवजात शिशु बमुश्किल एक इंच लम्बा और मात्र डेढ़ ग्राम वज़न वाला होता है। कुदरत के इस करिश्मे के साथ कंगारू का शरीर और भी कई अजूबों से जुड़ा है। ऑस्ट्रेलिया का पर्याय और पहचान बने कंगारू की ऑस्ट्रेलिया में आबादी इतनी बढ़ गई है कि अब ये ऑस्ट्रेलियाई किसानों और फसलों के लिए संकट बने हुए हैं।

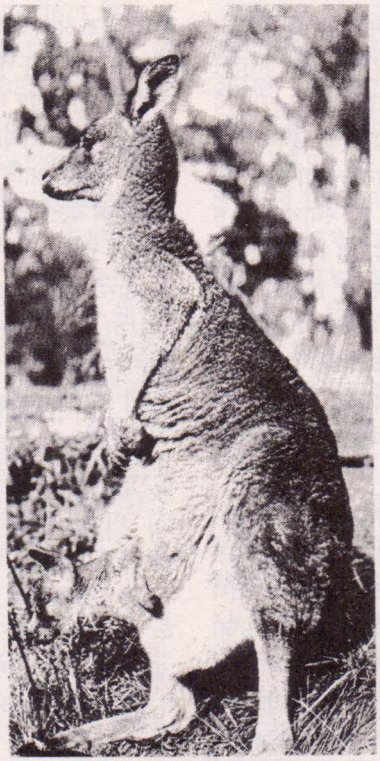

अम्मा की गर्माहट से अपने भोजन का मुआयना करता नन्हा शिशु

कंगारू 50 प्रकार के जंतुओं के समूह का प्रतिनिधित्व करता है। इनमें मस्की रेट प्रजाति का कंगारू सबसे कम वज़नी (पांच सौ ग्राम) और सबसे बड़ा भूरा व लाल कंगारू 90 किलोग्राम का होता है। सामान्यतः इनकी ऊंचाई छह फीट होती है लेकिन सात फीट के भी कंगारू होते हैं। इतने भारी भरकम शरीर का प्राणी होने के बावजूद कंगारू 25 से 30 फीट की छलांग लगाने में कुशल होते हैं। पृथ्वी पर इसका अस्तित्व बहुत पुराना माना जाता है। तीन करोड़ साल पुराने कंगारूओं के जीवाश्म अब प्राप्त हो चुके हैं। कंगारू के नवजात शिशु के क्रमबद्ध विकास के लिए इसके पेट से एक थैली लटकी होती है। इस कारण इसे दुनिया के अजीबोगरीब प्राणियों में गिना जाता है।

कंगारू ऑस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय चिन्ह है और समूचे महाद्वीप में पाया जाता है। ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय वायुयान सेवा 'क्वाण्टास' के विमानों को कंगारू के बने चित्र से ही पहचाना जाता है।

कंगारू स्तनधारी जीव है। इसके शरीर का अगला हिस्सा पिछले की तुलना में बहुत कम वज़नी होता है। इस कमी का संतुलन बनाए रखने का काम कंगारू की भारी-भरकम पूंछ करती है। इसके अगले पैर छोटे और पिछले पैर बड़े होते हैं। जब यह चारों पैरों के बल धरती पर खड़ा होता है तो पिछले पैरों को घुटनों से मोड़ लेता है। पिछले पैरों के बल ज़मीन पर खड़े होकर चलते वक्त इसकी पूंछ धरती पर रगड़ खाती है और निशान छोड़ती हुई चलती है।

इनका प्रजनन काल 29 से 38 दिन का होता है। मादा कंगारू एक बार में एक ही बच्चे को जन्म देती है। अपवाद स्वरूप एक हज़ार में औसतन एक मादा दो बच्चों को जन्म देती है। प्रसव क्रिया के ठीक पहले मादा थैली को भीतर से साफ कर लेती है और एक विशिष्ट स्थिति में बैठ जाती है ताकि प्रसव क्रिया सुगमता से सम्पन्न हो जाए। यह अपनी पीठ किसी पेड़ या चट्टान से टिका लेती है; पिछले दोनों पैरों को पसार लेती है; पैरों के बीच में इसकी पूंछ रहती है। जब बच्चा गर्भ से बाहर निकलता है तो वह मात्र एक इंच के आकार वाला और डेढ़ ग्राम (23 ग्रेस) भार का एक मांसपिण्ड होता है। इस पर पॉलीथीन सा खोल चढ़ा होता है। नवजात शिशु की आंखें बंद रहती हैं। इसके फेफड़े, मस्तिष्क, नाक, कान व अन्य संवेदी अंग और जननांग अविकसित रहते हैं। शरीर पर रोएं भी नहीं होते। प्रसव

के दौरान थैली से एक विशिष्ट प्रकार की गंध आती है। इसी गंध के सहारे शिशु थैली में प्रविष्ट होकर मां के चार स्तनों में से किसी एक स्तन के अग्रभाग से चिपटा पड़ा रहता है। शिशु स्वयं ही थैली में प्रवेश कर जाता है। मां इनकी कोई मदद नहीं करती है। थैली में प्रविष्ट होते वक्त यह कभी-कभी गिर भी जाता है और फिर थैली में चढ़ने का प्रयास करता है। थैली में शिशु के विकास का क्रम कंगारू की अलग-अलग प्रजातियों में भिन्न-भिन्न अवस्था में होता है। लाल कंगारू के बच्चे सात-आठ माह बाद थैली छोड़ देते हैं। जबकि भूरे कंगारू के शिशु एक साल तक थैली में रहते हैं।

शिशु कंगारू के पिछले पैरों के पंजे सात से ग्यारह दिन में विकसित होते हैं। इनका मुंह 160 दिन में खुलता है। 164 दिन की आयु में पूरे शरीर पर बाल उग आते हैं। आंखें 120 दिन में खुलती हैं। इस विकास क्रम के दौरान मां थैली को बार-बार साफ करती रहती है। 150 दिन का होने के बाद शिशु थैली से सिर बाहर निकालता है। 190 दिन का होने पर शिशु थैली से थोड़-थोड़े समय के लिए बाहर निकलता है और फिर थैली में प्रविष्ट होने के लिए पहले सिर घुसाता है और फिर थैली में गुलाटी खाकर सिर थैली के मुंह पर ले आता है, ताकि वह बाहर का नज़ारा देख सके। थैली को पूरी तरह छोड़ते वक्त इनका वज़न जन्म के समय से पांच हज़ार गुना तक बढ़ जाता है। यानी ये चार-पांच किलो तक के हो जाते हैं।

मां की थैली तक की महायात्रा के बाद शिशु कंगारू अन्य स्तनियों की तरह मां के स्तनों से जा लगता है।

मां कंगारूओं के स्तनों में दूध आने की प्रक्रिया बहुत विचित्र होती है। शुरूआत में दूध में वसा बहुत कम होती है, वह एक तरल पदार्थ भर होता है। जैसे-जैसे शिशु बड़ा होता है, वैसे-वैसे दूध में वसा की मात्रा बढ़ती जाती है। एक शिशु के दुधमुंहा रहने के दौरान ही यदि मादा दूसरे शिशु को जन्म दे देती है, तब यह नवजात शिशु भी थैली में पहुंचकर दूसरे स्तन से चिपक जाता है। ऐसे में हैरानी में डालने वाली बात यह होती है कि दूसरे स्तन से कम वसा वाला तरल पदार्थ निकलता है जबकि पहले वाले स्तन से ज़्यादा वसा वाला दूध ही निकलता रहता है।

जन्म लेने के छह-सात साल के भीतर कंगारू पूर्ण वयस्क व शारीरिक रूप से तंदुरुस्त हो जाते हैं। इस समय भूरे नर कंगारू का वज़न 70 किलोग्राम और मादा का 22 किलो 500 ग्राम होता है। भिन्न प्रजातियों के कंगारू नैसर्गिक जीवन में जोड़ा नहीं बिठाते हैं लेकिन बंदी जीवन (चिड़ियाघरों) में ये जोड़ा बिठाकर शिशु जन्मते हैं।

कंगारूओं की 50 उपप्रजातियां हैं। इनमें प्रमुख हैं - मस्क रेड, लार्ज ग्रे, यूरो, बालारू, वालाबी और पेडेमेलन। इनके रहने का अपना-अपना ढंग है। कुछ पेड़ों पर बंदरों की तरह रहते हैं, कुछ खुले मैदानों में, कुछ पहाड़ी क्षेत्रों में, कुछ रेगिस्तान में तो कुछ दलदली क्षेत्रों में रहने के आदी होते हैं।

कंगारूओं को जंगलों में सबसे ज़्यादा खतरा जंगली कुत्तों से होता है। ये इन्हें व्यूह रचना कर पकड़ लेते हैं। कभी-कभी छोटे कंगारूओं को अजगर भी निगल जाते हैं। इनके शिशुओं को गिद्ध और बाज अवसर पाते ही अपना आहार बना लेते हैं। जब जान पर ही आ बनती है तब कंगारू दुश्मन का सामना ज़बरदस्त घूंसेबाज़ी से करता है। दुश्मन से बचाव के लिए इसके पास एकमात्र यही तरीका होता है। कंगारू शाकाहारी प्राणी है और जंगली वनस्पतियां फल, फूल और घास खाता है।

कंगारूओं में प्रजनन क्षमता तीव्र होती है। इनकी बढ़ती आबादी वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया के लिए संकट का एक बड़ा कारण बनी हुई है। ये समूहों में आकर खेतों की फसलें चौपट कर जाते हैं। इनकी बेतहाशा बढ़ी तादाद से प्राकृतिक जलस्रोत भी प्रभावित हो रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया में 1982 में कंगारूओं

जन्म देने से पहले से 1/35 ओंस तक के बच्चे तक। अभी भी सुरक्षित पैक में महफूज़। इससे मुक्त होने के बाद वह 3 मिनट बाद मां की थैली तक पहुंच जाता है।

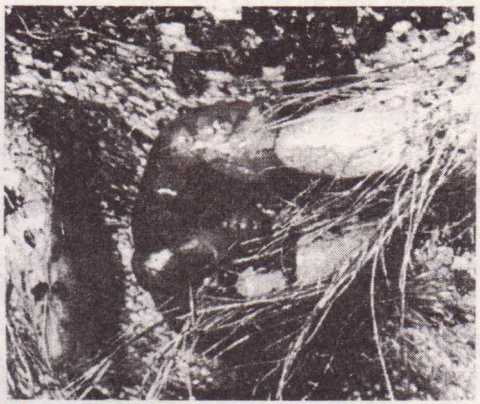

थैली में पहुंचकर वह मां के चार में से एक चूचक ढूँढकर चूसने लगता है

50 दिन का बच्चा। बच्चा एक साल तक खाना नहीं खाता, जबकि वह थैली तो 8 माह में ही छोड़ देता है।

का व्यापक स्तर पर हवाई सर्वेक्षण किया गया था। सर्वेक्षण के बाद इनकी संख्या 1.9 करोड़ आंकी गई थी। वर्तमान में इनकी संख्या तकरीबन ढाई करोड़ है।

1960 से 67 के बीच ऑस्ट्रेलिया से प्रति वर्ष 30 लाख किलो कंगारूओं का मांस निर्यात किया जाता था। इसकी आपूर्ति के लिए तीन लाख कंगारू हर साल मारे जाते थे। लेकिन अब इस निर्यात पर रोक लगा दी गई है। ऑस्ट्रेलिया के घरेलू खाद्य बाज़ार की पूर्ति व चमड़े के लिए भी कंगारूओं का मांस प्रयुक्त होता है। इस आपूर्ति के लिए ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने सालाना 20 लाख कंगारूओं के शिकार की कानूनी इजाज़त दी है। ऑस्ट्रेलिया के लोग कंगारू के मांस के बेहद शौकीन हैं।

अधिकांशत: शिकार बड़े और युवा नर कंगारूओं का किया जाता है क्योंकि इनमें मांस की मात्रा ज़्यादा होती है। छोटे नर व मादाएं ज़िन्दा रखी जाती हैं जो प्रजनन क्रिया को जारी रख वंश वृद्धि को बनाए रखती हैं। इस तरह कंगारूओं की तादाद में कमी नहीं आती।

डेढ़-पौने दो सौ साल पहले कंगारूओं की आबादी को संतुलित रखने का काम आदिवासी किया करते थे। उनका मुख्य आहार कंगारूओं का मांस ही था। लेकिन अंग्रेज़ों ने इन आदिवासियों को जंगलों से बेदखल कर

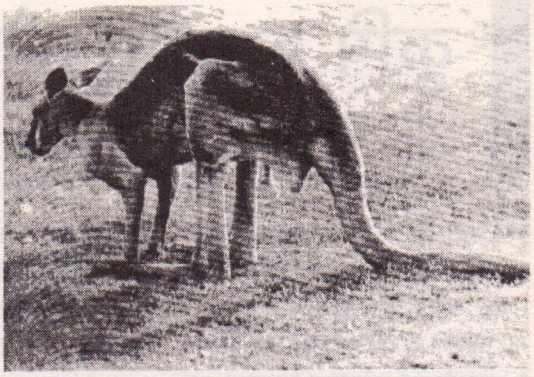

अपनी मजबूत पिछली टांगों और पूंछ पर टिका लाल कंगारू

दिया और वन काटकर जल भण्डारों का निर्माण कराया। इससे कंगारूओं का रहवास और सुविधाजनक हो गया और इनकी आबादी बढ़ती चली गई। कंगारूओं की संख्या में कमी लाने के लिए नसबंदी या वंध्याकरण प्रक्रिया के सुझाव प्राणी विशेषज्ञ दे रहे हैं। लेकिन इतनी बड़ी आबादी की नसबंदी करना बेहद कठिन और असंभव कार्य है। बहरहाल मौजूदा परिप्रेक्ष्य में कंगारू ऑस्ट्रेलिया के किसानों के लिए एक बड़ी समस्या व चुनौती बने हुए हैं। जिसका हल खोजने में सरकार असहाय नज़र आ रही है। ***(स्रोत फीचर्स)***

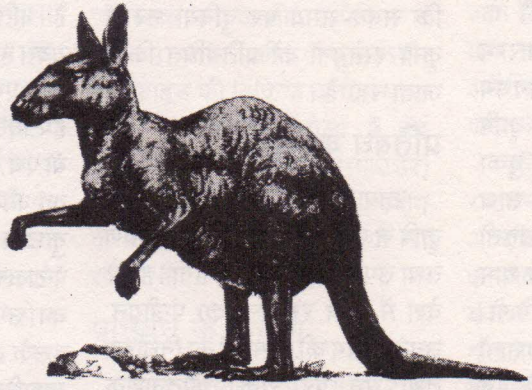

तकरीबन 10 लाख साल पहले प्लिस्टोसीन काल का लुप्त हो चुका कंगारू। यह आज के छोटे कंगारू से कुछ-कुछ मेल खाता था। सीधा खड़ा होने पर यह 6 फीट (1.8 मीटर) ऊंचा होता था।